Roll No. : .....

Total No. of Questions : **14**] [Total No. of Printed Pages : **4**

A–350

B.A. (Part–III) Examination, 2023

RAJASTHANI

Paper - I

(प्राचीन राजस्थानी काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

(सवालां रा जबाव हिन्दी या राजस्थानी में दिया जाय सकै।)

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– आठ में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– पाँच में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. नीचे लिख्योड़ा सवालां रा पड़ूत्तर देवो :

   (i) मारू रो पूरो नाम कांई हो ? वा किण देस री राजकंवरी ही ?

   (ii) अकाळ पड़ियो जद मारू रा पिता किण देस में गया, उठै रो राजा कुण हो ?

(iii) ढोला री कित्ती राणियां ही ? नाम बतावो।

(iv) ढोला मारू रा दूहा काव्य में आवै कि 'मैं कुरजां सरवर तणी पांख्यां किण ही न देत' अै बोल किणरा किणैर वास्तै क्यूं कहीज्या है ?

(v) "मारू हंदा संदेसड़ा बगड़ बिचाळै खाय" रो कांई भाव है ?

(vi) रतनसेन री पटराणी बगड़ कुण ही ? वा कांई बोल बोलियो जणसूं रतनसेन ने रीस आई ?

(vii) रतनसेन किण देश री यात्रा करे अर किणरै साथै ?

(viii) राजा रतनसेन किण खेल में किणने हरावै ?

(ix) राघव चेतन कुण हो ? उणने चित्तौड़ क्यूं छोडणो पड़ियो ?

(x) गोरा-बादल में कांई गुण हा इणसूं जुड़ियोड़ो काव्य रूप जिको पोथी में आयो है वो लिखो।

खण्ड–ब

नोट :– नीचै लिख्योड़ा पद्यांसां री सप्रसंग व्याख्या करो। कोई **पाँच** पद्यांस (सवाल) करो :

2. सउदागर राजा तिहां, बइठा मंदिर मंझ।

मारू दीठी अउझकइ, जांणि खिवी घण संझ॥

सुंदरि सोवन वरण तसु, अहर अलत्ता रंगि।

केसरि-लंकी, खीण कटि, कोमल नेत्र कुरंगि॥

3. पांखड़िया ही किउं नहीं, देव अवाडू ज्यांह।

चकवी कइ हइ पंखड़ी, रयणि न मेलउ त्यांह॥

आडा डूंगर भुइं घणी, तियां मिळीजई एम।

मनिहूं खिणहि न मेल्हियइ, चकवी दिणियर जेम॥

4. ऊनमि आई बादळी (बद्दळी) ढोलउ आयड चित्त।

यो बरसइ रितु आपणी, नइण हमारे नित्त॥

ऊनमियउ उत्तर दिसई, मेड़ी ऊपर मेह।

ते विरहिण किम जीवसे, ज्यांश दूर सनेह॥

5. वीरां रस सिणगार रस, हासा रस हित हेज।

सामि धरम रस सांभळु, जिम हुइ तनि अति तेज॥

सामि धरम जिणि साचविऊ वीरां रस सविसेष।

सुभटां महि सीमा लही, राषी खित्रवट रेख॥

6. पान प्रहासइ पद्मिणी, गलि तंबोल गिलंति।

निरमल तनि तंबोल ते, देह माझे दी संति॥

हंस गमणि हेजइं हसइं, वदन कमल विहसंति।

दंतकुली दीसइ जिसी, जांणि कि हीरा पंति॥

7. भमर घणां गुंजारव करइं, पदमिणि परिमलि मोह्या फिरइं।

पदमिणि तणु पटंतर एह, भूला भमर न छंडइ देह॥

पदमिणि रूप कही कुण सकइ, इंद्राणी थी अद्यिकी जकइ।

रतनसेन परणी पदमिणि, आस संपूरण हुई मन इणी॥

8. प्राचीन राजस्थानी काव्य री विसेसतावां रो वरणन करो।

9. नीचै लिख्योड़ा बिंदुवां में किणी एक माथै टीप लिखो।

(अ) वेळियो गीत री परिभासा अर गुण दाखला समेत लिखो।

(ब) जात विरोध दोस री परिभासा ने दाखला सूं समझाय'र लिखो।

(स) रस री परिभासा अर भेदां रो वरणन करो।

खण्ड–स

नोट :– नीचे लिख्योड़ा सवालां में किणी **दो** रा पड़ूत्तर देवो :

10. 'ढोला मारू रा दूहा' में विरह रा मरम परसी भावां रो जबरो वरणाव होयो है। वियोग सिणगार री परिभासा साथै मारू री उण विरह-वेदना री विरोळ करो।

11. 'ढोला मारू रा दूहा' ने संदेस काव्य रै रूप में मानतां थकां नायिका मारू रा संदेसां रो सांतरो वरणन करो।

12. 'गोरा बादिल चरित चउपई' रो कथासार लिखतां थकां गोरा अर बादल रो चरित्र-चित्रण करो।

13. अलाउद्दीन रतनसेन साथै कांई छळ करै अर गोरा बादळ इणरो बदळो किण भांत लेवै ? वरणन करो।

14. प्राचीन काव्य रौ इतिहास लिखतां उण बगत री खास-खास रचनावां रो वरणन करो।